चिट्ठी

कैलाश और रमेश में खूब दोस्ती थी। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। वे हमेशा साथ घूमते थे। गांव में ऐसा कोई न था जिसे ये दोनों न जानते हों। लेकिन अभी एक सप्ताह पहले रमेश को अपने पिताजी के साथ शहर जाना पड़ा क्योंकि उनका तबादला हो गया था। रमेश को भी पिताजी के साथ जाना था। उसे अब पढ़ना भी शहर में ही था।

न चाहते हुए भी रमेश को पिताजी के साथ जाना पडा। जब वह गांव से विदा हो रहा था तब कैलाश से कह गया था 'दुखी मत हो, मैं तुझे हर हफ्ते एक चिट्ठी लिखूंगा। तू भी चिट्ठी लिखते रहना।' रमेश ने जैसा कहा था वैसा ही किया। उसने कैलाश को यह चिट्ठी लिखी जिसका एक हिस्सा यहां पर दिया है।

10/02/1991

प्रिय कैलाश,

यहां सुबह छह बजे से दूध लेने जाना पड़ता है। बहुत देर तक लाइन में लगे रहो तब जाकर नंबर आता है और फिर दूध मिलता है। रोज सुबह छह से सात बजे तक नल आते हैं। वहां भी पानी के लिए लंबी-लंबी लाइनें लगती हैं। लेकिन ये काम मां-पिताजी मिलकर करते हैं। मैं तो नल आते ही नहा लेता हूं। फिर कुछ खाया और बस्ता खोलकर अपनी नई-नई किताबें देखता हूं। ये किताबें कल ही पिताजी लाये हैं।

मैं गांव से आने के बाद आज पहली बार अपने स्कूल गया। पिताजी मुझे स्कूल तक छोड़ने गये थे। स्कूल है तो पास, लेकिन रास्ते पर खूब भीड़ रहती है। स्कूल बहुत बड़ा है। इसमें बड़े-बड़े पांच कमरे हैं। मेरी कक्षा में 70 लड़के-लड़कियां हैं। लेकिन आधी छुट्टी में पिताजी देखने आये तो मुझे रोना आ गया। वे गुरूजी से बोलकर मुझे घर ले आए।

बस इस चिट्ठी में इतना ही। आगे के हाल अगली चिट्ठी में लिखूंगा। उम्मीद है तुम भी चिट्ठी लिखने वाले होगे।

तुम्हारा दोस्त ,

रमेश

कैलाश ने रमेश की चिट्ठी का क्या जवाब लिखा होगा? अपनी कापी में लिखो।

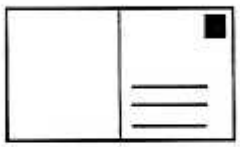

♣ सब बच्चे मिलकर कई तरह के पत्र जमा कर लो। इनके इस्तेमाल में अंतर, पता लिखने की जगह, बंद कैसे करते हैं, शादी की पत्रिका एवं अन्य प्रकार के पत्रों पर आपस में चर्चा करो।

♣ पता करो ये सब क्या होते हैं, इनकी कीमत कैसे तय होती है, और हर एक के सामने लिखो।

मनीआर्डर, ----------

टेलीग्राम, ----------

रजिस्ट्री ----------

पार्सल, ----------

वी.पी.पी. ----------

♣ *अपने दोस्त को पत्र लिखो।*

आती चिट्ठी जाती चिट्ठी
खबरों को पहुँचाती चिट्ठी।
पोस्टमेन को गलियों–गलियों
कैसे नाच नचाती चिट्ठी।
घर से दूर गए की चिंता
जरा दूर सरकाती चिट्ठी।
रिश्तों के इन सुखों–दुखों को,
अनुभव खूब कराती चिट्ठी।
कभी–कभी बयान से,
अच्छा दिल धड़काती चिट्ठी।

♣ *गाँव के सरपंच को पत्र लिखो।*

आवेदन पत्र

सेवा में,
प्रधान पाठक,
प्राथमिक शाला आमारवाल
द्वारा - कक्षा शिक्षक

बड़े गुरुजी,

नमस्ते,

मैं आपकी शाला की कक्षा 5 में पढ़ती हूँ। कल से मेरी माँ बीमार है और मेरे छोटे भाई की देखभाल करने के लिए घर पर कोई नहीं है। इसलिए मैं आज स्कूल नहीं आ सकूँगी। निवेदन है कि मुझे आज की छुट्टी देने की कृपा करें।

आपकी छात्रा
कु. नीरा तेकाम
कक्षा 5
प्रा.शा. आमारवाल

दिनांक 24.1.94

- कभी तुम बीमार हो जाते होगे या और किसी कारण से शाला नहीं जा पाते होगे। क्या तुम छुट्टी लेने के लिए इजाज़त लेते हो? क्या बड़ी बहनजी या बड़े गुरुजी को चिट्ठी लिखते हो? आमारवाल की शाला में तो छुट्टी लेने के लिए बड़े गुरुजी को चिट्ठी लिखनी पड़ती है। यहाँ नीरा नाम की लड़की ने इस स्कूल के बड़े गुरुजी को आवेदन पत्र लिखा है (यानी चिट्ठी लिखी है)। तुम भी छुट्टी के लिए बड़े गुरुजी या बड़ी बहनजी को आवेदन पत्र लिखो। उस पत्र में शाला न आ पाने का कारण ज़रूर लिखना। मन करे तो अलग-अलग कारण देते हुए दो-तीन आवेदन पत्र लिख लेना। यह देख लेना कि नीरा ने आवेदन पत्र के ऊपर और नीचे क्या-क्या लिखा है।

- तुमने अपनी सहेली और दोस्त को भी चिट्ठी लिखी थी। क्या उस चिट्ठी और इस आवेदन पत्र में तुम्हें कोई अन्तर लगता है? दोनों में क्या-क्या अन्तर हैं? अपने साथियों से और गुरुजी से चर्चा करो।

सभी कुओं में पड़ गई भांग,
बकते हैं सब ऊट पटांग

बिल्ली करती ढेंचू ढेंचू
गधा कर रहा म्याऊं म्याऊं
चूहा आगे बढ़ चिंघाड़े,
हाथी कहता मैं गुर्राऊं
कोयल बोले कुकडूं कूं कूं
और गुटरगूं देता बांग
सभी कुओं में पड़ गई भांग
बकते हैं सब ऊट पटांग।

उमाकांत मालवीय

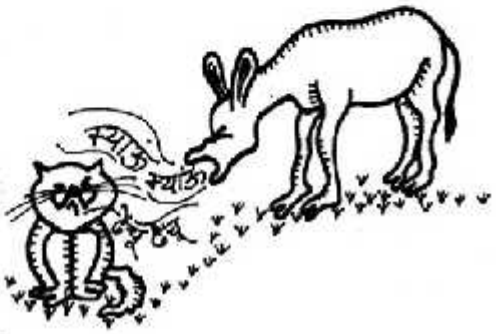

1 - कविता में आए किन-किन जानवरों ने भांग पी है? तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

2 - बिल्ली क्या बोल रही थी? गधा और चूहा क्या-क्या बोल रहे थे?

इनके बोलने को ऊट पटांग क्यों कहा जा रहा है?

3 - इन सब ने भी भांग पी है, तो बताओ कौन क्या बक रहा होगा? (कॉपी में लिखो।)

शेर, बकरी, मुर्गा, कुत्ता, मोर, कौआ, तोता, भैंस, गाय, बंछड़ा और चींटी।

4 - सही जोड़ी मिलाओ-(यदि जीवों ने भांग न पी हो तो कैसे बोलेंगे।)

1 - कोयल	कूकडूं कूं करता है।
2 - गधा	चीं चीं करता है।
3 - बिल्ली	कुहू कुहू करती है।
4 - चूहा	ढेंचू ढेंचू करता है।
5- मुर्गा	म्यांऊ म्यांऊ करती है?

● **कौन क्या करेगा।**

इन जानवरों के बोलने को क्या कहते हैं?

1 - हाथी चिंघाड़ता है।

2 - शेर ..... है।

3 - गाय ..... है।

4 - चिड़िया ..... है।

5 - गधा ..... है।

● *और शब्द लिखो -*

देना	देता	देते
मारना	मारता	मारते
नहाना	नहाता	नहाते
गुर्राना	.....	.....

● सभी कुओं में नमक पड़ जाता तो क्या होता?

● **नई तरह की पहेली।** नीचे के चित्र में शेर गुफा में सो रहा है। चूहा वहां पहुंचकर उसके कान में ज़ोर से चिंघाड़ना चाहता है। उसके सामने तीन फीते हैं, जो एक दूसरे के ऊपर-नीचे होते हुए शेर की ओर जाते हैं। पर दो फीते बीच में कहीं कटे हुए हैं, केवल एक ही फीता पूरा का पूरा शेर तक पहुंचता है। कौन सा?

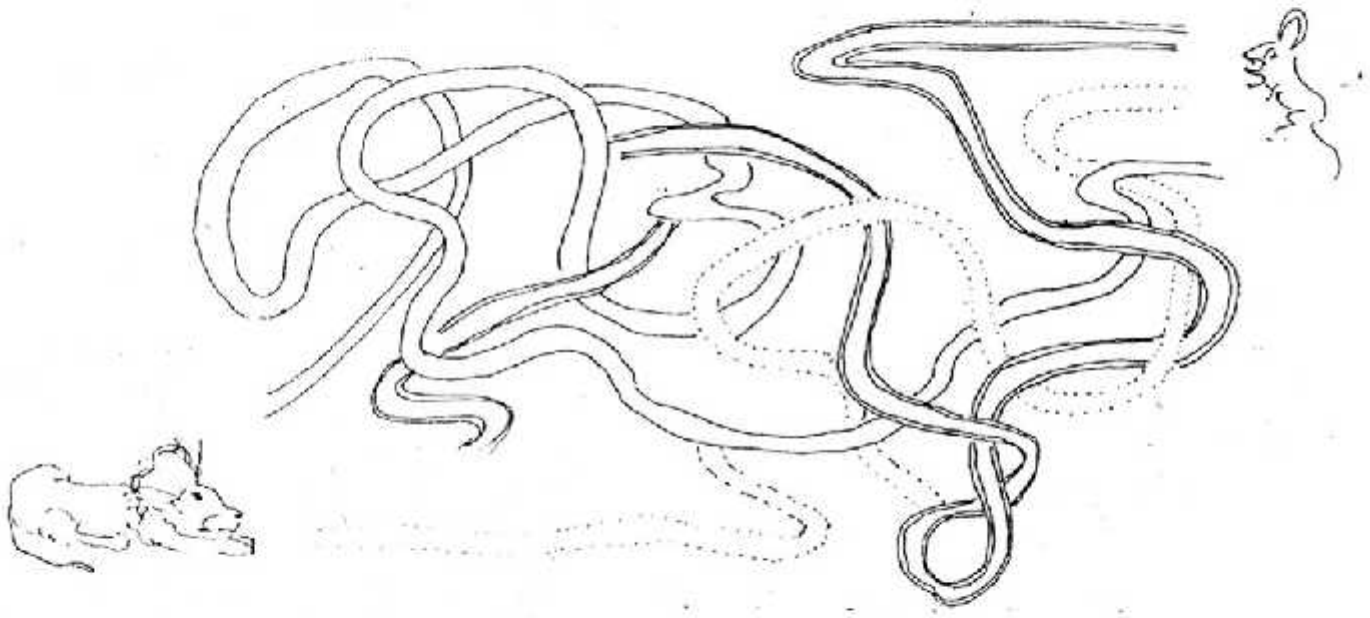

तुम भी ऐसी पहेली बना सकते हो। फीते, धागे, सुतली, रस्सी, पुराने कपड़े लेकर ऐसी और पहेलियां बनाओ, दोस्तों को बूझने को दो ।

फुलकी–चुटकी चटके चटा–चट

मदन रोज़ गाएँ लेकर जंगल में जाता था। एक दिन जब वह जंगल की तरफ जा रहा था तो रास्ते में उसे दूसरे गाँव का एक आदमी मिला। वह आदमी चुटकी बजाता जाता था और 'राधाकृष्ण, राधाकृष्ण' बोलता जाता था।

चुटकी की आवाज़ सुनकर मदन को बड़ा अचम्भा सा हुआ। उसने चुटकी की आवाज कभी सुनी ही नहीं थी।

मदन ने उस आदमी से पूछा, "भाऊ, आप क्या बजा रहे हैं?"

वो आदमी चालाक था। उसने तुरन्त ताड लिया। बोला, "अरे भैया! यह तो मेरी 'फुलकी' है। मैंने इसे पाला है।"

मदन ने कहा "भाऊ, आप अपनी यह फुलकी मुझे दे देंगे, तो मैं अपनी यह 'लीलकी' गाय आपको दे दूँगा।"

आदमी को तो हाँ–भर कहना था। उसने झटपट मदन को चुटकी बजाना सिखा दिया, और वह गाय लेकर चला गया।

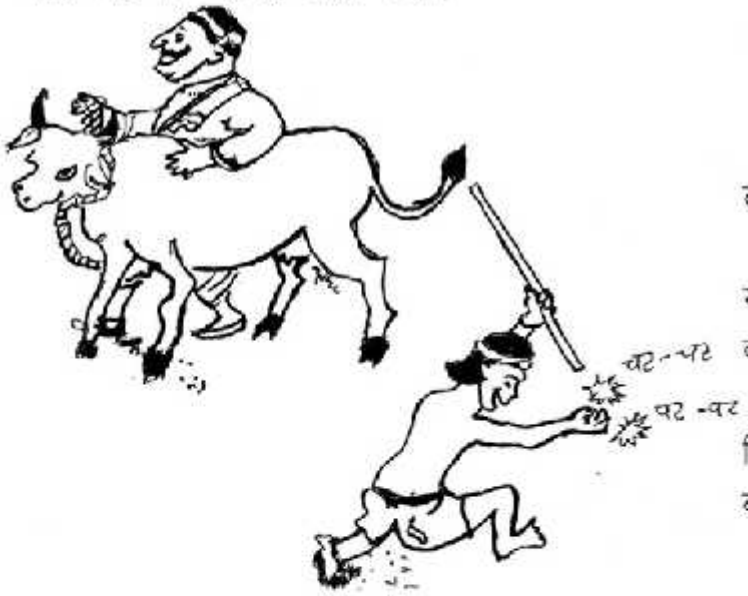

मदन बेहद खुश था वह दौड़ता हुआ घर पहुँचा। वहाँ आँगन में खाट पर दादाजी बैठे थे। उन्हें देखकर मदन ने मौज–ही–मौज में चुटकी बजाते हुए कहा, "दादाजी, दादाजी! देखिये तो!

अपनी लीलकी गाय देकर मैं यह फुलकी ले आया हूँ।

दादाजी ज़रा सुनिए तो!
यह कितनी अच्छी बजती है!"

दादाजी भी मदन से कुछ कम नहीं थे बोले, "अरे वाह! यह फुलकी तो बहुत ही बढ़िया दिखती है। फट–फट बजती है, और पट–पट बोलती है।"

मदन की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।

जब रात के खाने का समय हुआ, तो उसने पूछा, "माँ, इस फुलकी को मैं कहा रख दूँ?"

माँ बोली, "बेटा, इसे उस कुल्हड़ में रख दे। कुल्हड़ कुठले पर पड़ा है। ज़रा संभाल कर रखना।"

उस रात मदन ने मौज–ही–मौज में दोगुना खाना खाया। लेकिन जब हाथ धोकर वह फुलकी लेने पहुँचा, तो उसे कुल्हड़ में फुलकी नहीं मिली। उसका चेहरा उतर गया। वह चिल्लाया, "माँ, माँ! मेरी फुलकी गुम हो गई।"

दादाजी ने कहा, "अभी–की–अभी कहाँ चली गई? लगता है कुल्हड़ ही उसे निगल गया।" माँ ने सुझाया, "इस कुल्हड़ को तो तापना ही होगा। इसे तापने पर ही फुलकी वापस आएगी।"

आँगन में बड़ा सा अलाव जलाया गया और उसमें कुल्हड़ डाला गया। जब ज़ोर की आग जली तो मदन के हाथ सूख गए और चुटकी फिर बजने लगी। मदन तो खुशी से उछलने लगा, "लो यह मेरी फुलकी वापस मिल गई!"

वह फुलकी चटकाता रहा चट–चट, पट–पट,फट——

(यह कहानी ***गिजूभाई बधेका*** *की कहानियों के संकलन में से ली गई है)*

कहानी पर प्रश्न

1. मदन को जो आदमी मिला था वह क्या कर रहा था?

_____

_____

2. 'उसने तुरन्त ताड़ लिया' – उस आदमी ने क्या ताड़ लिया?

_____

_____

3. खाना खाने के बाद मदन को कुल्हड़ में से फुलकी क्यों नहीं मिली?

---

4. आग जलाने के बाद फुलकी मिल गई–यह कैसे हुआ?

मदन के बारे में कई जगह लिखा है। कहीं–कहीं उसका नाम लिखा है कहीं और कोई ऐसा शब्द है जिससे हमें समझ में आता है कि वह मदन की जगह इस्तेमाल हुआ है।

जैसे– एक दिन जब **वह** जंगल की तरफ जा रहा था.....।

*यहाँ **'वह'** मदन के लिए उपयोग किया गया है।* तुम ऐसे और वाक्य चुनो। उनमें से वह शब्द ढूँढो जो मदन के लिए लिखा है।

मदन के दादाजी ने कहा " अरे वाह ! यह फुलकी तो बहुत ही बढ़िया दिखती है।

अरे वाह के आगे (!) लगा है। यह तब लगाते है जब आश्चर्य या हैरानी में कुछ कहा जाता है।

ऐसे और भी शब्द तुमने सुने होंगे–

जैसे, आहा! कितना सुन्दर फूल है!
वाह! क्या बढ़िया खीर बनी है।
शाबाश! तुम तो बहुत अच्छा दौड़ीं।
क्या खूब!

और जोड़ो

ये शब्द तो खुशी में इस्तेमाल होते हैं। **ऐसे ही कुछ शब्दों से बुरा लगना समझ में आता है।**

जैसे– उफ! कितनी भीड़ है!
छी! कैसी बदबू आ रही है!

और जोड़ो

दुख हो तो हम अलग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

जैसे हाय! मेरी कमर में दर्द!
बाप रे! सारा खेत खत्म हो गया।

और जोड़ो।